

# जिलेट बरगंडी — अंक 3

बरगंडी — फ़्रांस

अंक 3 — आख़िरी फ़सल

कहानियाँ कभी एक जैसी नहीं होतीं, क्योंकि जिन पलों में वे मिलती हैं, वे पल कभी एक जैसे नहीं होते। जगहें बदलती हैं। मौसम बदलते हैं। लोग बदलते हैं। और जब औरतें उनकी राह में आ जाती हैं, तो हर भविष्यवाणी बेमानी हो जाती है।

यह कहानी मैं कुछ समय पहले सुना चुका हूँ। आज मैं इसे फिर सुनाना चाहता हूँ, पहले से ज़्यादा शिद्दत के साथ, लगभग अपने आप से एक बातचीत की तरह—स्मृति की एक पुकार, एक आवाज़ जो वक़्त के दरवाज़े पर दस्तक देती रहती है, और मुझे याद दिलाती है न सिर्फ़ वह जो हो चुका, बल्कि शायद वह भी जो अब भी हो सकता है।

**अंक 3 — आख़िरी फ़सल**

साबीन मेरे साथ थी, तो भविष्य अब दूर नहीं लगता था।

वह एक जगह बन गया था।

मैंने अंगूर के बाग़ों के पार नज़र दौड़ाई और नए मौसमों की कल्पना की। मैंने अपने बच्चों के बारे में सोचा, उनके बच्चों के बारे में, और उस सबके बारे में जो तब बचा रहेगा जब मुझमें घोड़े पर जागीर का चक्कर लगाने की ताक़त नहीं रहेगी। बरसों तक मैं काम के पीछे भागता रहा था।

ज़िम्मेदारियाँ।

चुनौतियाँ।

नतीजे।

मैंने देश पार किए थे, कारोबार खड़े किए थे, जीत और हार दोनों देखी थीं।

फिर भी लगता था कि सुकून ने बरगंडी के उसी कोने को चुना है, और उस औरत को जिसे समय ने अचानक मुझे लौटा दिया था।

साबीन बेलों के बीच मेरे साथ-साथ चलती थी।

हम कम बोलते थे।

एक उम्र के बाद आप जान जाते हैं कि ख़ामोशी अक्सर शब्दों से ज़्यादा साफ़ सच कहती है। दिन ऐसी सादगी से बहते रहे जिसे मैंने पहले कभी जाना हो, यह मुझे मुश्किल से ही याद आता था।

वाइन अपने पीपों में धीरे-धीरे पकती रही।

अंगूर के बाग़ अपने मौसमों के हिसाब से चलते रहे।

घोड़े खेतों में खुले दौड़ते रहे।

मेरे बच्चे अब ज़्यादा आने लगे।

और बरसों में पहली बार मैंने अपनी ज़िंदगी को देखा और कुछ भी बदलने की ज़रूरत महसूस नहीं की।

और वाइन?

ख़ैर, इसका जवाब तो रोमन पहले ही दे चुके थे।

In vino veritas.

वाइन में सच होता है।

मुखौटे गिर जाते हैं।

झूठ कमज़ोर पड़ जाते हैं।

दबी हुई भावनाएँ भी आख़िरकार बोलने की हिम्मत जुटा लेती हैं।

अपनी नई ज़िंदगी की कल्पना मैंने ऐसे ही की थी।

बरगंडी।

अंगूर के बाग़।

घोड़े।

साबीन।

मेरे बच्चे आसपास।

और मैं, क़तारों के बीच घोड़े पर, छँटाई जाँचता हुआ, यह परखता हुआ कि धूप बेलों को कैसे छूती है।

आख़िरकार सब कुछ अपनी जगह पर लगता था।

और मैं इक्यानवे बरस का हो चुका था।

इक्यानवे।

एक ऐसी उम्र जिसमें आदमी मान लेता है कि उसने इतना देख लिया है कि अब किसी बात पर हैरान नहीं होगा।

मैं ग़लत था।

क्योंकि मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि जागीर के लंबे रास्ते पर चढ़ती एक और कार की आवाज़ सुनूँगा। एक और कार।

एक और औरत।

एक और नौजवान।

गाड़ी धीमी हुई और हमसे कुछ मीटर दूर रुक गई।

मैंने साबीन को देखा।

मैंने कार को देखा।

मैंने उतरते हुए नौजवान को देखा।

पल भर के लिए मुझे यह बेतुका एहसास हुआ कि ज़िंदगी वह दृश्य दोहरा रही है जो मैं पहले जी चुका हूँ। औरत ने दरवाज़ा बंद किया और घर को ग़ौर से देखती हुई वहीं खड़ी रही।

फिर उसने मेरी ओर देखा।

उसके चेहरे पर उस इंसान का भाव था जो वहाँ इत्तफ़ाक़ से नहीं पहुँचा हो।

उस इंसान का भाव जिसने बरसों तलाश में बिताए हों।

मैंने महसूस किया कि मेरी बग़ल में साबीन तन गई है।

मैं भी हिल नहीं सका।

औरत कुछ क़दम आगे आई।

नौजवान उसके पास ही रहा।

उसने मुझे ग़ौर से देखा।

ज़रूरत से ज़्यादा ग़ौर से।

जैसे किसी पुष्टि की तलाश में हो।

जैसे कुछ ऐसा वापस पाने की कोशिश कर रही हो जिसके बारे में वह उम्र भर सुनती आई हो।

आख़िरकार वह मुस्कुराई।

एक कोमल मुस्कान।

लगभग उदास।

फिर उसने बस एक सवाल पूछा।

“क्या आप फर्दिनांदो फ्रेगा हैं?”

मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया।

डर हमेशा उससे नहीं आता जो हम नहीं जानते।

कभी-कभी वह उससे आता है जिसे हम शायद पहचान लें।

बरगंडी हमारे चारों ओर चुप खड़ा था।

ढलती रोशनी के नीचे अंगूर के बाग़ साँस ले रहे थे।

कोई नहीं बोला।

न साबीन।

न नौजवान।

न मैं।

क्योंकि उस पल मैं वह बात समझ गया जो इक्यानवे बरस मुझे नहीं सिखा पाए थे। ज़िंदगी अपने अधूरे हिसाब शायद ही कभी बंद करती है।

वह उन्हें सँभालकर रखती है।

उनकी हिफ़ाज़त करती है।

उन्हें धीरे-धीरे पकने देती है, पीपे में आराम करती वाइन की तरह।

फिर, ठीक उस वक़्त जब हम मान बैठते हैं कि कहानी ख़त्म हो रही है, वह एक ऐसा दरवाज़ा खोल देती है जिसे हम हमेशा के लिए बंद समझ चुके थे।

एक याद।

एक सवाल।

एक पछतावा।

एक औरत।

शायद एक बेटा।

शायद एक पुराना प्यार।

या शायद एक सच, जिसे हम तक पहुँचने के लिए पूरी एक उम्र चाहिए थी।

मैं बिना हिले खड़ा रहा।

साबीन मेरी बग़ल में।

वह औरत मेरे सामने।

और दो नौजवान, जो अलग-अलग कहानियों के थे—या शायद एक ही कहानी के।

और पहली बार मुझे जवाब जानने की कोई जल्दी महसूस नहीं हुई।

क्योंकि मैं समझ गया था कि नियति किताब बंद करने नहीं आई थी।

वह एक और पन्ना जोड़ने आई थी।

और शायद, बरगंडी के दिल में उस शाम, सबसे अहम अध्याय अभी शुरू ही हो रहा था।

---

फर्दिनांदो